किक्केरी सुब्बा राव नरसिंहस्वामी

Kikkeri Subba Rao Narasimhaswamy

श्री किक्केरी सुब्बा राव नरसिंह स्वामी, जिन्हें साहित्य अकादेमी आज अपने सर्वोच्च सम्मान, महत्तर सदस्यता, से विभूषित कर रही है, इस सदी के सर्वाधिक उल्लेखनीय कवियों में से एक हैं। समूची कन्नड काव्य परम्परा के संदर्भ में भी आपकी उपलब्धियाँ अन्यतम हैं।

कर्नाटक के मांड्य ज़िले के एक छोटे-से गाँव किक्केरी में 26 जनवरी 1915 को जनमे नरसिंह स्वामी ने अपनी स्कूली शिक्षा मैसूर में पूरी की। इंटरमीडिएट कॉलेज, मैसूर में कुछ समय तक अपने इंजीनियरिंग की पढ़ाई की। सेंट्रल कॉलेज, बंगलौर से आपने जूनियर बी.ए. की पढ़ाई पूरी की जो कि इस सदी के आरम्भिक दशकों में साहित्यिक गतिविधियों का वृहत् केन्द्र था। 1937 से लेकर 1970 में सेवानिवृत्त होने तक आपने एक सरकारी कर्मचारी के रूप में कार्य किया। 1936 में आपका विवाह श्रीमती वेंकम्मा से हुआ। आपके चार पुत्र और चार पुत्रियाँ हैं।

के.एस.ना. के नाम से प्रसिद्ध श्री स्वामी कन्नड काव्य परिदृश्य पर लगभग आधी सदी तक छाये रहे। आपकी चौदह मौलिक कृतियाँ और ग्यारह अनूदित कृतियाँ प्रकाशित हैं, जिनमें रॉबर्ट बर्न्स, पुश्किन, यूरीपिडीज और मार्क ट्वेन के अनुवाद शामिल हैं। यद्यपि आपने कविता, कहानी और निबंध कई विधाओं में लिखा है, लेकिन आपका अनन्य योगदान काव्य के क्षेत्र में ही है।

के.एस.ना. का प्रथम कविता-संकलन *मैसूरु मल्लिगे* 1942 में प्रकाशित हुआ जो बीसवीं सदी के कर्नाटक की सर्वाधिक लोकप्रिय काव्यकृति थी। यह एक ऐसे मुहावरे और ऐसी शैली में दाम्पत्य प्रेम की विविध मन:स्थितियों का चित्रण करती है जो अपनी सहजता और लालित्य के नाते अतुलनीय है। यद्यपि के.एस.ना. ने जो शैली गढ़ी, वह उनकी अपनी थी, लेकिन इसने ऊर्जा प्राप्त की थी कन्नड के सर्वाधिक लोकप्रिय दो कवियों–सर्वज्ञ और कुमारव्यास से, जब कि आपके बिम्ब विधान पर कन्नड लोक काव्य का प्रभाव रहा। के.एस.ना. अपने युग के एकमात्र ऐसे कवि थे, जिनकी अपील साहित्यिक पाठक वर्ग या एक विशेष क्षेत्र के संकीर्ण सीमांत से बाहर गई। इसका कारण यह है कि आपकी कविता कन्नड भाषा की प्रतिभा का सत्व प्रस्तुत करती है। अजब नहीं है कि यह कृति युवा लोगों में अत्यंत लोकप्रिय हुई और उस युग की किसी अन्य काव्य कृति की अपेक्षा इसके सर्वाधिक संस्करण प्रकाशित हुए। 1982 में इस पुस्तक के चुने हुए गीत इसी नाम की एक अत्यंत लोकप्रिय फ़िल्म *मैसूरु मल्लिगे* में लिये गये। इस कृति के अनेक गीतों का उपयोग दूसरी कई लोकप्रिय कन्नड फ़िल्मों में हुआ है और प्रत्येक कन्नडभाषी इन गीतों से परिचित है। के.एस.ना. की प्रारम्भिक कविता

Sri Kikkeri Subba Rao Narasimhaswamy, on whom Sahitya Akademi is conferring its highest honour of Fellowship today is one of the most remarkable Kannada poets of this century. His achievement is unique even in the context of the whole of Kannada poetic tradition.

Born on 26 January 1915 in a small village Kikkeri in Mandya District, he completed his school education in Mysore. He studied for engineering for a short while in Intermediate College, Mysore. He later completed his Junior B.A. from Central College, Bangalore, which was a great hub of literary activities in the early decades of the century. He worked as a government employee from 1937 till his retirement in 1970. In 1936 he married Smt. Venkamma. He has four sons and four daughters.

Popularly known as K.S. Na., he has dominated Kannada poetry scene for well over half a century. On the whole, he has to his credit 14 original works and 11 translations, including those of Robert Burns, Pushkin, Euripides and Mark Twain. Though his original works range over several genres like poetry, short fiction and prose essays, K.S.Na's unique contributon consists in the area of poetry.

K.S.Na's first book of poems, *Mysooru Mallige*, published in 1942 is one of the best loved books of poems of the 20th century Karnataka. It depicts the varying moods of marital love in an idiom and style unequalled for its simplicity and elegance. Though the unique style that K.S.Na. forged was all his own, it had drawn its energy from Sarvagna and Kumaravyasa, two most popular Kannada poets while the imagery used was reminiscent of popular Kannada folk poetry. K.S.Na is the only poet of his period whose appeal went beyond the narrow confines of literary readership or a particular region. The reason is that his poetry embodies the essence of the genius of Kannada language. No wonder this work became extremely popular with young people and has run into more editions than any other poetic work of the period. In 1982 a selection of songs from this book was made into a very popular film, also called *Mysooru Mallige*. Several of the songs of the book have been used in many other popular Kannada films and every Kannadiga knows these songs. The greatest influence on K.S.Na's early

पर सर्वाधिक प्रभाव रॉबर्ट बर्न्स का रहा।

मैसूरु मल्लिगे की अतिशय लोकप्रियता के बावजूद, के.एस.ना. ने आगामी काव्य कृतियों में अपनी इस सफलता को दुहराने से इनकार किया। *मैसूरु मल्लिगे* का मिज़ाज कन्नड नवोदय युग का है। 1950 के दौरान जब आधुनिकतावादी आंदोलन का कन्नड साहित्य पर जबर्दस्त प्रभाव रहा, के.एस.ना. ने इस परिवर्तन के प्रति अपने अनूठे तरीके से प्रतिक्रिया व्यक्त की। आपके बाद के संकलनों की कविताएँ यद्यपि प्रगेयात्मक ही रहीं, लेकिन इस प्रगेयात्मकता में बहुत जटिलता और गहराई है। 1958 में प्रकाशित *शिलालते* कन्नड काव्य की एक और अन्यतम कृति मानी जाती है। गोपाल कृष्ण अडिग के अधिक समाजोन्मुख, विचारधारा-प्रतिबद्ध और स्व-चैतन्य कविता के होते हुए भी इस संकलन की कविताएँ सिद्ध करती हैं कि प्रगेयात्मकता अथवा पारम्परिक छंद की बलि दिये बग़ैर आधुनिक जीवन की समूची जटिलताओं को अभिव्यक्त कर पाना सम्भव है। इस अवधि के दौरान के.एस.ना. रचित कुछ उत्कृष्ट कविताएँ अतियथार्थवाद और पारम्परिक काव्यात्मक कल्पनाशक्ति के मध्य के अंतराल को सफलापूर्वक पाटती हैं। 'गड़ियार डंगड़िय मुंदे' (घड़ी की दुकान के सामने) समय और काल पर एक अत्यंत काव्यात्मक चिन्तन है। एक दूसरी प्रसिद्ध कविता 'बिळिय हूगळ कविते गोरिगळ मेले' (श्वेत पुष्पों की समाधि पर) आधुनिकों की बौद्धिक कविता के विरुद्ध यथार्थ अनुभवों की कविता का प्रतिवाद है। यद्यपि के.एस.ना. इस अवधि के दौरान अनुभूतियों के कवि बने रहे, आपकी विश्वदृष्टि और बिम्ब आधुनिक युग की चिन्ताओं को उजागर करते हैं। तथापि आधुनिकतावाद के साथ आपका प्रेमियों का-सा झगड़ा है। आधुनिकतावादी कवियों से के.एस.ना. को पृथक करने वाला तत्व है–मनुष्य के प्रति दुर्दम्य आशा की प्रवृत्ति। ''भोर हो गई है'' के.एस.ना. अपनी एक कविता में कहते हैं,''यद्यपि सभी अख़बारों की घोषणा है कि हाइड्रोजन बम्ब विश्व को समाप्त कर देगा।''

1976 में प्रकाशित *तेरेदा बागिलु* (खुला हुआ दरवाज़ा) की कविताओं में के.एस.ना. की कविता का सबसे परिपक्व रूप सामने आता है। पूर्ववर्ती युग की अपनी कुछ कविताओं में के.एस.ना. ने अपना स्वयं का मानव केन्द्रित मिथ सर्जित किया था। इसके अनुसार ईश्वर ने संसार की रचना के तुरन्त बाद इसका परित्याग कर दिया था। अब समूची सृष्टि की देखरेख प्रकृति माँ करती है। कवि कहता है–''वेदों ने गायाः माँ ईश्वर है। लेकिन बेफकूफ़ घोषित करते हैं: वह माया है।'' के.एस.ना. अपने सबसे परिपक्व काल में इस 'माइथोलॉजी' का भी परित्याग कर देते हैं और कठोर यथार्थ के वाहक बन जाते हैं। मानव-परिवार के मार्मिक संदर्भ में इसमें काल और मृत्यु की समस्याओं की छानबीन है। अत्यंत सहजता ही यहाँ प्रयुक्त भाषा की विशेषता है। यह एक तरह की प्रगेयात्मक कविता है, जिसमें कन्नड कविता की संवादात्मक और नाटकीय परम्पराओं की शक्ति सन्निहित है। तात्पर्य यह कि कवि के.एस.ना. एक ऐसे पथ पर चले हैं, जिस पर इस सदी में कन्नड का कोई और कवि नहीं चला। आप अपनी जड़ों में धँसे भारत के आधुनिकतावादी कवि के प्रतीक हैं।

के.एस.ना. के अन्य कविता-संकलन हैं–*ऐरावत, दीपद मल्लि, उंगुरा, इरुवंतिगे, मनेयिन्द मनेगे, नवपल्लव, दुंदु मल्लिगे* आदि। 1986 में आपकी

poetry was Robert Burns.

The immense popularity of *Mysooru Mallige* notwithstanding, K.S.Na refused to repeat his success in his future works of poetry. The mood of *Mysooru Mallige* is that of Kannada Navodaya period. During the 1950s when Modernist Movement swept over Kannada literature, K.S.Na responded to this shift in his own unique way. The poems of his later collections continued to be lyrical but his later lyricism took on greater complexity and depth. K.S.Na's *Shilalathe* published in 1958 marks another landmark in Kannada poetry. In the face of a more socially oriented, ideologically committed and self-conscious poetry of Gopala Krishna Adiga, the poems of this work prove that it is possible to capture all the complexities of modern life without sacrificing lyricism or traditional metre. Some of the best poems composed by K.S.Na during this period have successfully bridged the gap between surrealism and traditional poetic imagination. *Gadiyara Dangadiya Munde* (In Front of the Watch-shop), is an intense poetic meditation on time and aging. Another well-known poem, *Biliya Hoogala Kavite Gorigala Mele* (On the Tomb of White Flowers) is a defence of poetry of felt experiences against the intellectualist poetry of the moderns. Though K.S.Na continued to be a poet of feelings during this period his worldview and imagery also embody the anxities of modern age. After all K.S.Na had only a "lover's quarrel" with modernism. What distinguishes K.S.Na from the modernist poets is an attitude of indomitable hope for man. "The dawn has broken," says K.S.Na in one of his poems of the period, "though all papers declare that the Hydrogen Bomb will finish the world."

The most mature face of K.S.Na's poetry was represented in *Tereda Baagilu* published in 1976. In some of the poems of his earlier period K.S.Na had created his own anthropocentric myth. According to this, God abandoned the world soon after creation. All life is now looked after by Mother Nature. The poet says of her, "The Vedas sang: Mother is God. But fools declare: She is Maya." K.S. Na's most mature period abandoned even this mythology and became a vehicle of stark realism. It explored problems of aging and death in the poignant context of the human family. The language used is marked by a profound simplicity. It is a kind of lyrical poetry that has retained all the strength of the dialogic and dramatic traditions of Kannada poetry. On the whole, K.S.Na, the poet, has trodden a path which no Kannada poet has, in this century. He typifies the deeply rooted modernist poet of India.

K.S.Na's other books of poems include, *Iravatha, Deepada Malli, Ungura, Iruvanthige, Maneyinda Manege, Navapallava, Dundu Mallige* etc. His complete poems were published under the title, *Malligeya Male* in 1986. It is not an accident

समूची कविताएँ *मल्लिगेय माले* नाम से प्रकाशित हुईं। यह संयोग नहीं है कि के.एस.ना. के अधिकांश कविता-संकलनों के शीर्षक कर्नाटक के सबसे प्यारे फूलों के नाम पर रखे गये हैं। जन संस्कृति के साथ गहरे रिश्ते का द्योतन करने के अतिरिक्त ये, वृद्धि और उर्वरता के प्रति आपकी गहन चिन्ता को उजागर करते हैं।

के.एस.ना. की अनूदित कृतियाँ में *मोहन माले* (गांधी वचन), 1956; *नन्न कनसिन भारत, प्रपंचद बाल्यदल्ली*, 1965; मीडिया (यूरीपिडीज), 1966; *हकलबरी फिन्नन साहसगळु*, 1969; सुब्रह्मण्य भारती, 1971; *माया शंख मत्तु इतर कथेगळु* (बालकृति), 1977; *रानिय गिळि मत्तु राजन मंगा* (बालकृति), 1972; *पुश्किन अवर जार सुल्तान मत्तु हमसवती* (बालकृति), 1977; *रॉबर्ट बर्न्स काव्य केलवु प्रेम गीतेगळु*, 1998; *केलवु चिनि कवनगळु*, 1998 शामिल हैं। यूरीपिडीज और पुश्किन की कविताओं के आपके अनुवाद बहुत सराहे गये। 1974 और 1976 के मध्य के.एस.ना. ने कर्नाटक सरकार द्वारा प्रकाशित पत्रिका *युवा कर्नाटक* का सम्पादन किया।

के.एस.ना. को अपने साहित्यिक योगदान के लिए विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। 1942 में आपको देवराज बहादुर पुरस्कार से और 1974 में राज्य सांस्कृतिक विभाग तथा कर्नाटक राज्य साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 1978 में आपको अपने युगांतरकारी कविता-संग्रह *तेरेदा बागिलु* के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 1987 में ही आपको कुमारन आसान पुरस्कार से और 1996 में प्रतिष्ठित मास्ति साहित्यिक पुरस्कार से विभूषित किया गया। बंगलौर विश्वविद्यालय ने 1992 में आपको डी.लिट. की मानद उपाधि से अलंकृत किया और कर्नाटक सरकार ने 1996 में सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार पम्प प्रशास्ति से।

समालोचकों द्वारा 'मध्यम मार्ग के कवि' के रूप में अभिहित के.एस.ना. ने अपनी कविता के मुहावरे और विषयवस्तु में परम्परा और आधुनिकता के श्रेष्ठ तत्व आत्मसात् किये हैं। सहज शैली पर अपनी पकड़ ढीली किये बग़ैर आपने आधुनिकतावाद की चुनौतियों का उत्तर दिया है जो समाज के सभी वर्गों को प्रभावित करता है। अनुभूतियों से भरी होने के बावजूद आपकी कविता ज़मीन से जुड़ी रही है। जटिलताओं की विक्षुब्धकर जानकारी ने मनुष्य और प्रकृति के प्रति आपकी आशा को क्षीण नहीं किया है। आपकी कविता में मनुष्य और प्रकृति के प्रतिदिन के नाटक को अभिव्यक्ति मिली है। कवि के शब्दों में उसकी कविता 'पृथ्वी पर पुष्पित सत्य की झाँकी' है।

कन्नड कविता को अपने अनन्य योगदान के नाते साहित्य अकादेमी किक्केरी सुब्बा राव नरसिंह स्वामी को अपने सर्वोच्च सम्मान, महत्तर सदस्यता, से विभूषित करती है।

that most of K.S.Na's books of poems are named after the best-loved flowers of Karnataka. Apart from suggesting his intimate kinship with people's culture, they also suggest his deep concern with the theme of growth and fertility.

K.S.Na's works of translation include, *Mohana Male* (Gandhiji's Sayings), 1956; *Nanna Kanasina Bharatha*; *Prapanchada Balyadalli*, 1965; *Medea* (Euripides), 1966; *Huckleberry Finnana Sahasagalu*, 1969; *Subrahmanya Bharati*, 1971; *Maya Shankha Mattu Itara Kathegalu* (for children), 1977; *Raniya Gili Mattu Rajana Manga* (children's poems), 1972; *Pushkin Avara Jar Sulthana Mattu Hamsavathi* (for children), 1977; *Robert Burns Kavya Kelavu Prema Geethegalu*, 1998; *Kelavu Chini Kavanagalu*, 1998. His translation of Euripides and Pushkin's poems have been deeply appreciated. Between 1974 and 76. K.S.Naa edited *Yuva Karnataka*, a journal published by Government of Karnataka.

K.S.Na has received various awards and book prizes in recognition of his several contributions. He has won Devaraja Bahadur Award in 1942, Award from State Cultural Department and Karnataka State Sahitya Akademi Award, 1974. The Sahitya Akademi conferred its award for his epoch- making collection of poetry, *Tereda Baagilu* in 1978. He also received Kumaran Asan Award in 1987 and the prestigious Masti Literary Award in 1996. Bangalore University conferred a doctoral degree (Hon. Causa) on him in 1992 and Government of Karnataka, its highest literary award Pampa Prashasti in 1996.

Described by critics as "the poet of the golden mean," K.S.Na has imbibed the best of tradition and modernity in the idiom and content of his poetry. He responded to the challenges of modernism without losing grip over an essentially simple style which has an appeal to all sections of society. Though charged with feelings, his poetry has remained down-to-earth. His disturbing awareness of complexities has not dampened his hope for man and nature. His poetry has always responded to the everyday drama of human and natural world. To quote the poet himself, his poetry is 'the vision of truth flowering on the terrestrial.'

For his unique contribution to Kannada poetry the Sahitya Akademi confers its highest honour, the Fellowship, on Kikkeri Subbha Rao Narasimha Swamy.

Acceptance Speech

K.S.Narasimha Swamy

I have great pleasure in acknowledging the honour done to me by the Sahitya Akademi by electing me a Fellow of the Akademi.

I have been in the field of poetry since 1931 and have so far published 10 collections of poems. I have closely followed the path shown to me by late Prof. B.M. Srikantiah in his *English Geethagalu*. I am influenced by our Folk-literature on the one side and Robert Burns on the other. I am grateful to Prof. A.R.Krishna Sastry and Prof. T.N. Srikantiah for my earlier collections. My first collection of poems named *Mysooru Mallige* was published in the year 1942 by the Karnataka Sangha, Maharaja's College, Mysore and has gone into 36 editions so far.

As age advanced and experience became complex, the tone changed and all aspects of life became the theme of my poetic output. Prof. V. Sitaramiah, who taught me Modern English Poetry, is responsible for the change of tone.

Whether love-poetry or varieties of poetry, I have maintained rustic simplicity and realism. I have not only written poems dealing with the joys and sorrows of the common man but also a number of songs which are very popular. I am happy to say that Kannada cassettes and films have selected my songs which is also the reason for the popularity of my songs. Most of them have been translated into English and other Indian languages. I have also translated some ten works from English. In the main, I am a poet and have represented Kannada poetry in hundreds of seminars and conferences.

My collection of poems *Tereda Bagilu* won the Central Sahitya Akademi Award in the year 1977. The Bangalore University conferred on me a Doctorate. I was unanimously elected the President of All India Conference of the Kannada Sahitya Parishat. 3 years ago, the Govt. of Karnataka honoured me by giving Pampa Award.

I am grateful to the Central Sahitya Akademi for their electing me a Fellow.